# माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में व्यक्तित्व, आत्मसम्प्रत्यय एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

## A Comparative Study of Personality, Self-Concept & Adjustment of Government and Non-Government School Students at Secondary Level.

शिक्षाशास्त्र में डाक्टर ऑफ फिलॉसफी (पी-एच.डी.)

उपाधि हेतु

प्रस्तुत

## संशोधित शोध-प्रारूप

शोध निर्देशक
डॉ. वी.पी.अग्रवाल
सह.आचार्य (से.नि.)
शिक्षा विभाग

शोधकर्ता
केसरी चन्द
एम.ए.,एम.एड., एम.फिल

क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान (एन.सी.ई.आर.टी.) अजमेर

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

सत्र : 2016

(Appendix : IV)

# महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर

| | | |
|---|---|---|
| 1. | Name of Scholar | Keshri Chand<br>केसरी चन्द |
| 2. | Title of Research Work : | माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में व्यक्तित्व, आत्मसम्प्रत्यय एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन<br><br>**A Comparative Study of Personality, Self-Concept & Adjustment of Government and Non-Government School Student at Secondary Level.** |
| 3. | Location : | |
| | (a) Institution/Depeartment where the work is to be done | क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, (एन.सी.ई.आर.टी.) अजमेर-305004, राज. |
| | (b) Geographical area of Investigation, if any. | …….. |

## 4. – प्रस्तुत शोध की प्रस्तावना, महत्व एवं उद्देश्य :-

**Introduction Importance of Proposed Investigation, Objectives :-**

### 4.1 : प्रस्तावना :-

आधुनिक युग में हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुसंधान का विशेष महत्व है। समाज और राष्ट्र की प्रगति को शोध के परिणाम द्वारा पहचाना जाता है, क्योंकि समाज और राष्ट्र की मूल समस्याओं का समाधान शोधकार्य द्वारा किया जाता है। इसी क्रम में शिक्षा के क्षेत्र में आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु शोध की अपनी विशेष भूमिका है। विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के विकास हेतु विभिन्न प्रयास

किए जाते हैं। माध्यमिक स्तर का शिक्षण कार्यक्रम ही विद्यार्थी के सम्पूर्ण जीवन के विभिन्न चरणों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इन विद्यालयों में आने वाले छात्र-छात्रायें बाल्यावस्था की सीमा पार करते हुऐ किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं। इन विद्यालयों में वे अपने अधिकारों एंव कर्तव्यों का पाठ पढ़ते हैं तथा नागरिकता की शिक्षा प्राप्त करके अपने भावी जीवन की तैयारी करते हैं। यह काल बालक-बालिकाओं के बनने-बिगडने का काल होता है, क्योंकि इस समय विद्यार्थियों में स्वाभाविक रूप से विशेष ऊर्जा एंव स्फूर्ति होती है। नेतृत्व एवं नागरिकता का प्रशिक्षण इन विद्यालयों का दायित्व है। इस स्तर पर बालक-बालिकाओं को बडें ही संतुलित मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।

व्यक्तित्व, व्यक्ति के सभी पक्षों का एक विशिष्ट संकलन होता है, जो उसके सम्पूर्ण रूप को प्रदर्शित करता है। कुछ पक्ष अन्य की अपेक्षा अधिक विशिष्टता लिये हुए होता है जैसे- दूसरों के साथ आपका आचरण, वेशभूषा, प्रेरणा और दूसरों की दृष्टि से आपकी नैतिकता और सदाचार की मात्रा आदि। आपकी संवेदन और प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रियाओं, सीखने की क्षमता, स्मरण एवं तर्क शक्ति और आपकी प्रेरक प्रक्रियाओं के रूप को पृष्ठभूमि में डाल देते हैं। साधारणतया व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग व्यक्ति के आकार, डील-डौल, रंग-रूप तथा उसका दूसरे व्यक्तियों पर पड़ने वाले प्रभाव से लगाया जाता है।

व्यक्तित्व सम्पूर्ण मनुष्य है, उसकी स्वाभाविक रूचि तथा क्षमताएं, उसके भूतकाल में अर्जित किये गये अधिगम फल, इन कारकों का संगठन तथा समन्वय, व्यवहार प्रतिमानों, आदर्श, मूल्यों तथा अपेक्षाओं की विशेषताओं से पूर्ण होता है। भारतीय विचारकों की दृष्टि से कपिलमुनि ने अपने 'सांख्यशास्त्र' में व्यक्तित्व के तीन गुणों सतोगुण (सत्य), रजोगुण (रजस) तथा तमोगुण (तमस) का परिणाम कहा है। श्रीमद्‌भागवत गीता के 14 वें अध्याय में बड़े विस्तार से इस बात पर लिखा गया है कि सत्य, रजस, तमस से किस प्रकार मनुष्य का व्यक्तित्व बनता है।

व्यक्तित्व एक पदार्थ है जो व्यक्ति में निहित है तथा उसकी क्रियाओं को निर्धारित करता है। शाब्दिक अर्थ में व्यक्तित्व का अर्थ बाहरी दिखावे से है लेकिन

गूढ़ अर्थ में यह व्यक्ति की आन्तरिक क्षमताओं का संगठन भी है। व्यक्तित्व एक ऐसा समेकित सामाजिक गुण है, जिसे व्यक्ति वस्तु सापेक्ष, सक्रिय तथा सम्प्रेषण के दौरान अर्जित करता है और जो सामाजिक सम्बन्धों में उसकी सहभागिता के स्तर तथा स्वरूप की विशेषता बताता है।

समायोजन एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है। जीवित अवयव साधारण से जटिल अवस्था में निरन्तर समायोजन का प्रयास करता है। इस समायोजन का सम्बन्ध प्राणिशास्त्रीय आवश्यकताओं जैसे-भूख तथा प्यास की संतुष्टि से सम्बन्धित होता है अथवा मानवीय स्तर पर मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं जैसे- सम्बन्ध स्थापना की इच्छा, प्रेम तथा वात्सल्य प्राप्त करने की इच्छा या रचनात्मक आत्म प्रदर्शन के अवसर प्राप्त करने की इच्छा पूर्ति से होता है। समायोजित व्यक्ति सामाजिक परिस्थितियों तथा दशाओं को पर्यावरण में इस प्रकार समायोजित करने का प्रयत्न करते हैं जिससे क्रियाओं के प्रतिदिन के कार्यक्रम सरलता से चल सकें।

''समायोजन प्रक्रिया में तीन तत्व मुख्य रूप से विद्यमान होते हैं। कुंठित करने वाली परिस्थितियाँ, विविध प्रत्युत्तर तथा प्रेरणायें। यदि आवश्यकताओं की पूर्ति में पर्यावरणीय परिस्थितियाँ बाधा नहीं उत्पन्न करती हैं तो समायोजन स्वतः हो जाता है। जब हम समायोजन सम्बन्धी प्रक्रिया का वास्तविक जीवन में विश्लेषण करते हैं तो यह सर्वथा विदित होता है कि व्यक्ति में समायोजन की क्षमता पूर्व अनुभवों, बाह्य पर्यावरणीय दशाओं तथा व्यक्तिगत शक्तियों पर निर्भर होती है।''

आत्म-सम्प्रत्यय पद का प्रयोग शिक्षा एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में विस्तृत रूप से किया जाता है। इसे सामान्य रूप से व्यक्ति के स्व से सम्बन्धित विचारों, भावनाओं एवं अभिवृत्तियों से समझा जाता है। इस प्रकार से जो कुछ भी कोई व्यक्ति अपने बारे में सोचता और समझता है, उसे उसके आत्म-सम्प्रत्यय के नाम से जाना जाता है। अतः एक विद्यार्थी भी अपने बारे में धारणा बनाने से पहले अपने 'स्व' का बोध करता है।

यद्यपि आत्मसम्प्रत्यय की क्षमता का विकास बाल्यावस्था से ही प्रारम्भ हो जाता है किन्तु आत्मसम्प्रत्यय की सर्वाधिक आवश्यकता युवावस्था में होती है। युवावस्था ही

वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति को एक साथ अनेक दायित्वों का निर्वहन करना होता है। उसे भाई-बहन, माता-पिता, पति-पत्नी आदि समाज के सदस्य, देश के नागरिक व एक कर्मठ विद्यार्थी या कर्मचारी के रूप में अपने कार्यभारों को सफलतापूर्वक निभाना होता है। अतः ऐसी स्थिति में आत्मसम्प्रत्यय की कमी विद्यार्थी को सहज ही पथभ्रष्ट कर सकती है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सूक्ष्म निरीक्षण यह दिखाता है कि विद्यार्थी में आत्मसम्प्रत्यय की क्षमता का निरन्तर ह्रास होता जा रहा है।

उपर्युक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, आत्मसम्प्रत्यय एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करने का निर्णय लिया है। इस प्रकार का अध्ययन कार्य आज तक बहुत ही कम हो पाया है, बल्कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में व्यक्तित्व, आत्मसम्प्रत्यय एवं समायोजन को एक साथ लेकर शोध अध्ययन नहीं हुआ है। अतः माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की समस्याओं का अध्ययन कर सरकार, संचालकों, समाज एवं राष्ट्र को एक नई दिशा दिखाने में यह शोधकार्य मार्गदर्शन कर सकेगा।

### 4.2 : शोध का महत्व :-

किसी भी समस्या पर शोध करने में पूर्व यह देखना आवश्यक है कि विभिन्न दृष्टिकोणों से समस्या का हल कितना उपयोगी है, हम जानते हैं कि बालक समाज व राष्ट्र के भावी नागरिक है। देश का भविष्य ऐसे बालकों के हाथ में है, जो शिक्षा प्राप्त करने के बाद भावी उत्तरदायित्व को सम्भालने वाले हैं। परिवार, समाज व देश की बालकों से बड़ी-बड़ी आशाएं हैं।

किसी भी देश का विकास तब ही सम्भव है जब सभी व्यक्ति मिलकर देश की तरक्की में अपना सहयोग प्रदान करें। यदि कोई एक समुदाय या वर्ग अपना पूर्ण सहयोग प्रदान नहीं करें तो देश के विकास में बाधा पहुंचना स्वाभाविक है। वर्तमान समय में समाज में जटिलताऐं, विषमताएं, अधिकारों की मांग एवं आरक्षण आदि

जैसी ज्वलन्त समस्याएँ उत्पन्न हो रही है जो विद्यार्थियों के कोमल मन मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डालती है जिससे विद्यार्थी सामाजीकरण की प्रक्रिया में समाज के साथ सही सामंजस्य नहीं बैठा पा रहा है एवं वह अपने मूल्यों का निर्वाह सही ढंग से नहीं कर रहा है जो उसकी सृजनात्मक क्षमता को प्रभावित कर रही है। यदि हम कुछ ऐसे जिम्मेदार कारकों को खोजने में सफल हो सके जो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, समायोजन एवं आत्मसम्प्रत्यय से जुड़े हैं तो यह शिक्षा जगत में एक बड़ा योगदान साबित होगा।

व्यक्तित्व व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक व्यवस्था का गत्यात्मक संगठन है। जो कि उसे उसके पर्यावरण के साथ समायोजित करने के लिए अनोखे ढंग से अपनाया जाता है। यह समायोजन गृह स्वरूप, समाज संवर्ग एवं विद्यालय के साथ किस प्रकार हो जाता है। इसकी जानकारी व्यक्तित्व का समन्वित समायोजित स्वरूप प्रकट करेगा।

व्यक्तित्व एक अति जटिल धारणा है, इसके अन्तर्गत मनुष्य के सब प्रकार के आन्तरिक एवं बाहरी गुणों का समावेश होता है। व्यक्ति व्यवहार से जो कुछ भी होता है वह सब उसके व्यक्तित्व का ही प्रतीक है। व्यक्तित्व समाज द्वारा मान्य तथा अमान्य गुणों का संतुलन है। व्यक्तित्व एक व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यवहार-प्रतिमान और इनकी विशेषताओं के योग का उल्लेख करता है। वास्तव में व्यक्तित्व उस ढंग को कहते हैं जिसके द्वारा कोई व्यक्ति अपने परिवेश के साथ अनुकूलन करता है। व्यक्तित्व एक व्यक्ति के व्यवहार के तरीकों, रूचियों, दृष्टिकोणों, क्षमताओं तथा तरीकों का सबसे विशिष्ट संगठन है जिसके आधार पर वह किसी समस्या को समझता है तथा उसका समाधान करता है। व्यक्तित्व की महत्ता को देखते हुए विद्यार्थियों के सुदृढ़ व्यक्तित्व का निर्माण करना आज की महत्ति आवश्यकता है।

आत्म-सम्प्रत्यय एक व्यक्ति की अपने प्रति बनाई गई धारणा है जो कि किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण कारक व आधार है। **इ.वी.हरलॉक** के अनुसार, **"आत्म-सम्प्रत्यय वे धारणायें हैं जो व्यक्ति अपने संबंध में रखते हैं।"** एक व्यक्ति जिस तरह के विचार अपने संबंध में रखता है, जिस प्रकार अपना प्रत्यक्षीकरण

करता है या जिस ढंग से स्वयं को देखता है, उसे ही हम इसका आत्म-सम्प्रत्यय कहते हैं।

किसी व्यक्ति के जीवन में उसकी सफलता केवल उसकी उच्च स्तरीय शैक्षिक उपलब्धियों से ही निर्धारित नहीं होती है, यह निर्धारित होती है, उसके स्व की पहचान से। प्रत्येक व्यक्ति में आत्म-सम्प्रत्यय का विकास होता है, किन्तु यह विकास किस सीमा तक होगा, यह निर्धारित होता है कई कारकों द्वारा। बालकों में आत्म-सम्प्रत्यय के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों में महत्वपूर्ण हैं - उसका पारिवारिक परिवेश, आर्थिक-सामाजिक परिस्थितियों व उसके विद्यालय का वातावरण। विद्यालयी वातावरण में बालक के आत्म-सम्प्रत्यय को विकसित करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है अध्यापक, जो कि देश की भावी पीढ़ी का निर्माता भी कहलाता है। इस प्रकार एक अध्यापक सच्चे अर्थों में देश के भविष्य का निर्माता भी कहा जा सकता है।

'आत्म-सम्प्रत्यय' विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पक्ष है जो कि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उनके व्यक्तित्व और परिणामतः उनकी अध्यापन क्रिया को भी प्रभावित करता है। बालक विकास की विभिन्न अवस्थाओं पर भिन्न-भिन्न प्रत्ययों का निर्माण करता है। प्रारम्भ में बालक का आत्म-सम्प्रत्यय सरल होता है। जैसे-जैसे बालक वृद्धि और विकास के मार्ग पर आगे बढ़ता है, उम्र के साथ-साथ उसमें वातावरण में उपस्थित वस्तुओं, विचारों तथा घटनाओं के बारे में विभिन्न संप्रत्ययों का विकास होता जाता है। इस प्रकार के संप्रत्ययों की सहायता से व्यक्ति को अपने आपको योग्यताओं, क्षमताओं, अच्छाईयों, बुराईयों, गुणों व दोषों के साथ जानने और पहचानने का उचित अवसर मिलता है। इस बोध की सहायता से वह न केवल अपने आपको दूसरों के नजरिये से बल्कि स्वयं के नजरिये से भी अच्छी तरह माप-तौल सकता है। व्यक्ति की अपने व्यवहार, योग्यताओं तथा अच्छाइयों के बारे में जो भी निर्णय, मूल्य तथा अभिवृत्तियाँ होती है, उन्हीं के समग्र रूप को व्यक्ति के आत्म-सम्प्रत्यय के नाम से जाना जाता है।

समायोजन एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है। जीवित अवयव साधारण से जटिल अवस्था में निरन्तर समायोजन का प्रयास करता है। इस समायोजन का सम्बन्ध प्राणिशास्त्रीय आवश्यकताओं जैसे-भूख तथा प्यास की संतुष्टि से सम्बन्धित होता है अथवा मानवीय स्तर पर मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं जैसे- सम्बन्ध स्थापना की इच्छा, प्रेम तथा वात्सल्य प्राप्त करने की इच्छा या रचनात्मक आत्म प्रदर्शन के अवसर प्राप्त करने की इच्छा पूर्ति से होता है। समायोजित व्यक्ति सामाजिक परिस्थितियों तथा दशाओं को पर्यावरण में इस प्रकार समायोजित करने का प्रयत्न करते हैं जिससे क्रियाओं के प्रतिदिन के कार्यक्रम सरलता से चल सकें।

अतः शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में व्यक्तित्व, आत्मसम्प्रत्यय एवं समायोजन को महत्वपूर्ण स्थान देने का प्रयास इसलिए किया क्योंकि वर्तमान संदर्भ में तीनों ही तथ्यों के अध्ययन का महत्व बढ़ता जा रहा है। अतः व्यक्तित्व, आत्मसम्प्रत्यय एवं समायोजन को विद्यार्थियों में जागृत करने के दृष्टिकोण से शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में इनका महत्व स्थापित किया है, साथ ही यह अध्ययन विद्यार्थियों के अलावा शिक्षा से जुड़े अन्य पहलुओं के लिए भी महत्वपरक होगा।

## 4.3 : शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य :-

1. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में व्यक्तित्व के प्रकारों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में आत्मसम्प्रत्यय के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं में व्यक्तित्व के प्रकारों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं में आत्मसम्प्रत्यय के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

6. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं में समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

7. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में व्यक्तित्व के प्रकारों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

8. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में आत्मसम्प्रत्य के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

9. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

## 5. सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन :-

**Review (Work already done on the subject of proposed Research Study.):-**

किसी भी कार्य की अच्छी सफलता के लिए शोधकर्त्ता को संबंधित साहित्य एवं सामग्री का ज्ञान होना आवश्यक है। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे वह भौतिक विज्ञान का क्षेत्र हो अथवा सामाजिक विज्ञान का साहित्य का पुनरावलोकन अनिवार्य एवं प्रारम्भिक कदम है।

संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित उन पुस्तकों, ज्ञान कोश, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से शोधकर्ता को अपनी समस्या के चयन प्रक्कल्पना निर्माण, अध्याय का प्रारूप तैयार करने एवं कार्य को गति देने में सहायता मिल सकती है।

### 5.1 व्यक्तित्व सम्बन्धित अध्ययन :-

1. **अधिएम्बो, डब्ल्यू, एम, ओडवार, ए. जे. और मिल्ड्रेड, ए. (2011)** ने **दी रिलेशनशीप अमंग स्कूल एडजस्टमेंट, जेण्डर एण्ड एकेडेमिक अचीवमेंट अमंगगेस्ट सैकण्डरी स्कूल स्टूडेण्ट्स इन किसुमु डिस्ट्रिक्स कीनिया** शोध शीर्षक

पर शोध किया और निष्कर्ष रूप से पाया कि सरकारी सहायता प्राप्त की अपेक्षा निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का स्तर उच्च है। सरकारी सहायता प्राप्त की अपेक्षा निजी विद्यालयों के विद्यालयों के सामाजिक समायोजन का स्तर उच्च है।

2. **मुघोबोजी, पायलट** (2012) ने **सोशल एण्ड एकेडेमिक एडजस्टमेंट ऑफ फर्स्ट ईयर यूनिवर्सिटी स्टूडेण्ट्स** नामक शोध किया और निष्कर्ष रूप से पाया कि निजी की अपेक्षा सरकारी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का स्तर उच्च है। निजी की अपेक्षा सरकारी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का स्तर उच्च है। छात्र की अपेक्षा छात्राओं के सामाजिक समायोजन का स्तर उच्च है। छात्र की अपेक्षा छात्राओं के शैक्षिक समायोजन का स्तर उच्च है।

3. **शाह, जे.के. और शर्मा, बी.** (2012) ने **ए स्टडी ऑन सोशल मैच्योरिटी, स्कूल एडजस्टमेंट एण्ड एकेडेकिमक अचीवमेंट अमंग रेजीडेन्शियल स्कूल गर्ल्स** नामक शोधकार्य किया और निष्कर्ष रूप पाया कि आवासीय विद्यालयी छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता और विद्यालयी समायोजन में उच्च सकारात्मक सहसम्बन्ध है।

4. **कौर, सरबजीत** (2012) ने **ए स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट ऑफ हाई स्कूल स्टूडेण्ट्स इन रिलेशन टू देअर अचीवमेंट, सेक्स एण्ड लोकल्टी** शोधकार्य किया और निष्कर्ष रूप से पाया कि ग्रामीण और शहरी के विद्यार्थियो के समायोजन स्तर में अन्तर नहीं है। छात्र और छात्राओं के सामायोजन स्तर में अन्तर नहीं है। सरकारी और निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

5. **कौर, मंजीता** (2013) ने **ए कम्पेरिटिव स्टडी ऑफ इमोशनल मैच्योरिटी ऑफ सीनियर सैकेण्डरी स्कूल स्टूडेण्ट्स** विषय पर शोधकार्य किया और निष्कर्ष रूप में पाया कि सरकारी की अपेक्षा निजी विद्यालयों के विद्यार्थी अधिक संवेगात्मक समायोजित है।

6. **गनी, एम.वाई और मीर, एम.ए. (2013)** ने **कम्पैरेटिव स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट एण्ड एकेडेमिक अचीवमेंट ऑफ कॉलेज स्टूडेण्ट्स** नामक शोधकार्य किया और निष्कर्ष रूप में पाया कि सरकारी की अपेक्षा निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का स्तर उच्च है। सरकारी और निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सरकारी और निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में संवेगात्मक समायोजन में अन्तर नहीं है।

7. **अल्लाही (2014)** ने **ए स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट ऑन एकेडमी अचीवमेंट ऑफ हाई स्कूल स्टूडेण्ट्स** शोध शीर्षक पर शोधकार्य किया और निष्कर्ष रूप में पाया कि सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। छात्र और छात्राओं के समायोजन के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

8. **रामावतार (2014)** ने **विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक शैक्षिक संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के व्यक्तित्व, समायोजन, मनोबल एवं कार्य संतोष का तुलनात्मक अध्ययन** विषय पर पी-एच.डी. स्तरीय शोधकार्य करते हुए निष्कर्ष में पाया कि राजस्थान राज्य में स्थित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों ने व्यक्तित्व के ''आत्म सम्प्रत्यय, मिजाज एवं समायोजन'' आयामों पर अधिक बल दिया जबकि विधि महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों ने ''अर्न्तमुखी-बहिर्मुखी, आत्मनिर्भरता एवं दुश्चिन्ता'' आयाम पर अधिक बल दिया। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण एवं विधि महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यक्तित्व का स्तर लगभग समान होता है।

9. **सारण, धर्माराम (2015)** ने **विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, व्यक्तिगत मूल्य, अध्ययन आदतों एवं आकांक्षा स्तर का अध्ययन** विषय पर पी-एच.डी. स्तरीय शोधकार्य करते हुए निष्कर्ष में पाया कि पहाड़ी एवं मैदानी क्षेत्र के विद्यार्थी मरू क्षेत्र के विद्यार्थियों से अधिक उत्साही पाए गए। मरू, पहाड़ी एवं मैदानी क्षेत्र के विद्यार्थियों की सक्रियता-निष्क्रियता,

आग्रही–अनाग्रही, विषाद–विषाद रहित, अनुत्साही, संदेह ग्रस्त–विश्वासी, संवेगात्मक अस्थिरता–स्थिरता पक्षों में तथा मैदानी एवं पहाड़ी क्षेत्र के विद्यार्थियों के उत्साह पक्ष में कोई अन्तर नहीं पाया गया। मैदानी एवं पहाड़ी क्षेत्र के छात्र मरू क्षेत्र के छात्रों से अधिक उत्साही एवं संदेहग्रस्त पाए गए जबकि मैदानी क्षेत्र के छात्र पहाड़ी क्षेत्र के छात्रों से भी अधिक उत्साही पाए गए।

10. **दीक्षित, पूर्णिमा और सिन्धु, आई.एस.** (2015) ने **इम्पैक्ट ऑफ सोशल एण्ड इमोशनल कॉम्पेटेन्स अपोन अचीवमेंट एण्ड एडजस्टमेंट ऑफ एलीमेन्ट्र स्कूल स्टूडेण्ट्स** शोध शीर्षक से शोधकार्य किया और निष्कर्ष रूप में पाया कि छात्र और विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। कक्षा छह और कक्षा सात में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है। सरकारी और गैर–सरकारी क्षेत्र में कार्यरत पिताओं के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

## 5.2 आत्मसम्प्रत्यय सम्बन्धित अध्ययन :–

1. **वर्मा, डी० पी० तथा श्रीवास्तव, एस० एस०** (1998) ने **विद्या भारती के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों की शैक्षिक उपलब्धि, चिंता एवं आत्मसम्प्रत्यय का अध्ययन** विषय पर प्रोजेक्ट स्तरीय शोधकार्य करके अपने निष्कर्ष में पाया कि आत्मसम्प्रत्यय के आयाम पर विद्या भारती के खिलाड़ियों का स्तर सामान्य भारतीय विद्यार्थियों की तुलना में उच्च कोटि का है। इस आयाम पर भी विद्या भारती की बालिका खिलाडी बालकों की तुलना में उच्च कोटि की है। विद्या भारती के खिलाड़ियों की शैक्षिक उपलब्धि, चिन्ता एवं आत्मसम्प्रत्यय में परस्पर धनात्मक और सार्थक सम्बन्ध है जो सामान्य प्रचलित धारणाओं से मेल नहीं खाता।

2. **सक्सैना, डॉ. एस.के.** (2001) ने **हाई सकूल के प्रथम श्रेणी छात्रों के आत्म–सम्प्रत्यय पर सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का प्रभाव** नामक शीर्षक पर पी–एच.डी. स्तरीय शोध कार्य किया और पाया कि औसत सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रथम श्रेणी छात्रों का आत्म–सम्प्रत्यय उच्च व

निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के प्रथम श्रेणी छात्रों से तुलनात्मक रूप से अधिक है।

3. **माली, राजकुमार** (2002) ने **सम्पन्न और विपन्न वर्ग के किशोर विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता, आत्म-सम्प्रत्यय एवं विद्यालयी निष्पति का तुलनात्मक अध्ययन** किया। रिसर्च प्रोजेक्ट स्तर पर शोधकार्य के लिए न्यादर्श के रूप में चूरू जिले के ग्यारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों के 200 छात्र-छात्राओं को चुना गया। निष्कर्ष में पाया गया कि सम्पन्न एवं विपन्न वर्ग के विद्यार्थियों की सम्पूर्ण समायोजन क्षमता, सामाजिक व नैतिक आत्म-सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. **सिंह, रमेश** (2004) **ने माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के आत्म-सम्प्रत्यय का उनके स्थान के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन** नामक शीर्षक पर शोध किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि नगरीय एवं ग्रामीण छात्रों के स्थान का, छात्रों के शैक्षणिक स्तर से सम्बन्धित आत्म-सम्प्रत्यय के विकास में कोई विशिष्ट योगदान नहीं है। नगरीय बालकों ने अपने संवेगात्मक गुणों, शैक्षणिक स्तर, बौद्धिक योग्यताओं और सामाजिक आर्थिक स्तर के ग्रामीण बालकों की अपेक्षा बेहतर आत्म-सम्प्रत्यय प्रदर्शित किया।

5. **मासोमेह खोसराब** (2005) ने - **किशोर विद्यार्थियों के आत्म-सम्प्रत्यय तथा दुश्चिंताओं के मध्य पाये जाने वाले संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन** करते हुए निष्कर्ष स्थापित किया कि किशोर विद्यार्थियों के आत्म-सम्प्रत्यय का उनके द्वारा व्यक्त चिंताओं के स्तर में सार्थक सह-सम्बन्ध है। इस दिशा में लड़कियों में लडकों की तुलना में अधिक सार्थक सह-सम्बन्ध पाये गये। अध्ययन हेतु अनुसंधानकर्त्री ने **''पियर्स हैरी का आत्म सम्प्रत्य परीक्षण''** एवं **''सारसन का सामान्य चिंता परीक्षण''** का प्रयोग कर **''आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि''** से दत्त संकलन माध्य, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात को सांख्यिकी तकनीकी के रूप में प्रयोग कर, लक्ष्यपरक निष्कर्ष प्राप्त किए।

6. **हुसैन, अकबर** (2006) ने **शारीरिक विकृत किशोरों का आत्म-सम्प्रत्यय** विषय पर पी-एच.डी. स्तरीय शोधकार्य करके अपने निष्कर्ष में पाया कि शारीरिक विकृत किशोर के आत्म-सम्प्रत्यय पर विक्षिप्तता का कोई प्रभाव नहीं था क्योंकि आत्म-सम्प्रत्यय सामान्य किशोर के समान था।

7. **भाकर, मेघराज** (2009) ने **उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म-सम्प्रत्यय, संवेगात्मक स्थिरता एवं नैतिक निर्णय पर गृह परिवेश के पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन** शीर्षक पर पी-एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया। शोधकर्त्ता ने बीकानेर संभाग से 1000 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया। निष्कर्ष में पाया कि उत्तम गृह परिवेश के विद्यार्थियों का सम्पूर्ण आत्म-सम्प्रत्यय, बुरे गृह परिवेश के छात्रों के सम्पूर्ण आत्म-सम्प्रत्यय से उच्च है। उत्तम गृह परिवेश के विद्यार्थियों की सांवेगिक स्थिरता का स्तर बुरे गृह-परिवेश के विद्यार्थियों की सांवेगिक स्थिरता के स्तर से उच्च पाया गया। उत्तम गृह परिवेश के विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय का स्तर बुरे गृह परिवेश वाले विद्याथियों के नैतिक निर्णय के स्तर से उच्च पाया गया। आत्म-सम्प्रत्यय, सांवेगिक स्थिरता तथा नैतिक निर्णय की योग्यता के विकास में विद्यालय में विद्यालय वातावरण तथा गृह परिवेश का प्रभाव महत्वपूर्ण पाया गया।

8. **पाल बालकृष्ण,** (2009) ने **सेवारत प्राथमिक शिक्षकों को सूक्ष्म शिक्षण कौशलों का उनके समायोजन और आत्म-सम्प्रत्यय के सम्बन्ध में अध्ययन** शीर्षक पर जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय नई दिल्ली से पी-एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया। शोध के निष्कर्ष में पाया कि डब्क और सर्वोदय विद्यालय के प्राथमिक अध्यापकों में सूक्ष्म शिक्षण कौशल और आत्मसम्प्रत्यय में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं होता। पुरुष और महिला प्राथमिक अध्यापकों में सूक्ष्म शिक्षण कौशल और आत्मसम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता। बी.एड. धारी और डिप्लोमा धारी प्राथमिक अध्यापकों के भी समायोजन एवं सूक्ष्म शिक्षण में कोइ्र सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया। पुरुष और महिला प्राथमिक अध्यापकों, सर्वोदय एवं डब्क विद्यालयों के प्राथमिक अध्यापकों, बी.एड. धारी और डिप्लोमाधारी प्राथमिक अध्यापकों, के आत्म-सम्प्रत्यय एवं समायोजन में

कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया। लिंग के आधार पर प्राथमिक शिक्षकों के आत्मसम्प्रत्यय में अन्तर पाया गया।

9. **शर्मा, एकता** (2009) ने **किशोरों में शैक्षिक उपलब्धि, उपलब्धि अभिप्रेरणा आत्म-सम्प्रत्यय और समायोजन स्तर का सृजनात्मकता के साथ सम्बन्ध** शीर्षक पर जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय नई दिल्ली से पी-एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया। इस शोध में शैक्षिक उपलब्धि आश्रित चर और सृजनात्मकता, उपलब्धि अभिप्रेरणा, आत्म-सम्प्रत्यय और समायोजन स्वतन्त्र चर थे। पश्चिमी दिल्ली के 770 (14 से 15 वर्ष के) किशोर विद्यार्थियों न्यादर्श में शामिल किया गया। निष्कर्ष में पाया कि सृजनात्मकता, उपलब्धि अभिप्रेरणा, आत्म-सम्प्रत्यय, उज्ज्वल भविष्य और समायोजन पर शैक्षिक उपलब्धि से कोई सार्थक अतःक्रिया नहीं पाई गई। सृजनात्मकता, उपलब्धि अभिप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि की भविष्यवाणी में सार्थक योगदान दिया। समायोजन का किशोरों की सृजनात्मकता, उपलब्धि अभिप्रेरणा, आत्म-सम्प्रत्यय में नकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया, जबकि दोनों चरों में सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

10. **सैनी, श्रीमती सुनीता** (2010) ने **राजस्थान के आदिवासी एवं सामान्य वर्ग के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति, आत्म-सम्प्रत्यय एवं आकांक्षा स्तर का अध्ययन** शीर्षक पर पी-एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया तथा निष्कर्ष में पाया कि आदिवासी तथा सामान्य वर्ग के छात्रों के आत्म-सम्प्रत्यय में सार्थक अन्तर नहीं है जबकि आदिवासी छात्राओं की तुलना में सामान्य वर्ग की छात्राओं का आत्म-सम्प्रत्यय सकारात्मक रूप से अधिक पाया गया। आदिवासी छात्रों तथा छात्राओं के आत्म-सम्प्रत्यय में कोई अन्तर नहीं पाया गया। सामान्य वर्ग के छात्रों की तुलना में सामान्य वर्ग की छात्राओं का आत्म-सम्प्रत्यय सकारात्मक रूप से अधिक पाया गया।

## 5.3 समायोजन सम्बन्धित अध्ययन :-

1. **सोनी अनीता (2010)** ने **सहशिक्षा एवं बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की समस्याओं का समायोजन एवं व्यक्तित्व का अध्ययन** शीर्षक पर प्रयोजनात्मक शोधकार्य किया और शोध के उद्देश्य सहशिक्षा एवं कन्या विद्यालयों में अध्ययन छात्राओं की समस्याओं का अध्ययन करना एवं सहशिक्षा एवं कन्या विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के समायोजन एवं व्यक्तित्व का अध्ययन करना। इस शोध के निष्कर्ष में पाया कि समायोजन पर आर्थिक एवं व्यावसायिक स्थिति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है और न ही वे विद्यालय के प्रकार को प्रभावित करते हैं और व्यक्ति जैसे परिवेश में रहता वैसा ही उसका समायोजन हो जाता है। सभी प्रकार के विद्यालय शैक्षिक दृष्टि से साधन-सुविधाओं से सम्पन्न हैं एवं छात्राओं में भी अध्ययन कार्य के लिए पूर्व की तुलना में परिवर्तन हुआ है। आज लड़कियां घर से दूर रहकार अध्ययन करने लगी हैं जिस कारण समय-समय पर उन्हें अनेक समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है। अतः स्पष्ट है कि आज बदले परिवेश में कुछ समस्याएं आई भी हैं वे तो इन समस्याओं को गौण कर देती है।

2. **गोयल (2011)** ने **विद्यालयीन शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का उनकी कार्य सन्तुष्टि, व्यक्तित्व एवं मानसिक स्वास्थ्य** के संदर्भ में अध्ययन किया। शोध के निष्कर्ष में उच्च एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाले शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता में अन्तर पाया गया। शिक्षक प्रभावशीलता, कार्य सन्तुष्टि, व्यक्तित्व एवं मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

3. **निर्मला देवी (2011)** ने **व्यक्तित्व व उपलब्धि अभिप्रेरणा के संदर्भ में विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन** विषय पर शोधकार्य किया। इनके अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य संवेगात्मक, सामाजिक, शैक्षणिक एवं समग्र समायोजन तथा उपलब्धि - अभिप्रेरणा में सम्बन्ध का अध्ययन करना तथा संवेगात्मक, सामाजिक, शैक्षणिक और समग्र समायोजन पर उपलब्धि अभिप्रेरणा, बहिर्मुखता और मनोविक्षुब्धता के प्रभाव का अध्ययन करना था। निष्कर्ष में पाया कि उपलब्धि अभिप्रेरणा का

समायोजन पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। बहिर्मुखता का सामाजिक, शैक्षणिक और समग्र समायोजन पर धनात्मक प्रभाव पड़ता है।

4. **मद्दाही एवं अन्य** (2012) ने **महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की पालन पोषण की शैलियों एवं व्यक्तित्व आयामों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन** किया। अध्ययन के उद्देश्य पालन पोषण की शैलियों एवं व्यक्तित्व के आयामों के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना था। निष्कर्ष में व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों में से खुलापन एवं अधिकारपूर्ण व्यक्तित्व आयाम का अधिकारपूर्ण पालन पोषण शैली से सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

5. **शर्मा, अनूप कुमार** (2013) ने **राजकीय एवं कस्तुरबा गाँधी उच्च प्राथमिक विद्यालयों की छात्राओं में नैतिक मूल्यों, सृजनात्मकता एवं समायोजन पर विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन** शीर्षक पर पी-एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि राजकीय एवं कस्तुरबा गाँधी उच्च प्राथमिक विद्यालयों की छात्राओं के नैतिक मूल्यों के आयाम 'बेईमानी की प्रवत्ति' में सार्थक अन्तर पाया गया है जबकि 'झूठ बोलने की प्रवृत्ति, चोरी की आदत एवं वाचालता' आयामों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। मध्यमानों के आधार पर राजकीय छात्राओं की अपेक्षा कस्तुरबा छात्राओं के मध्यमान कम हैं।

6. **इकबाल व बानो** (2013) ने **विज्ञान, कला एवं वाणिज्य विद्यार्थियों के मध्य व्यक्तित्व कारक : एक तुलनात्मक अध्ययन** विषय पर शोधकार्य किया। विज्ञान, कला और वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व शीलगुणों पर किये गये इस अध्ययन कार्य के प्रमुख उद्देश्य विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों में विभिनन व्यक्तित्व शीलगुणों के आधार पर अन्तर ज्ञात करना, विज्ञान एवं कला संकाय के विद्यार्थियों में विभिन्न व्यक्तित्व शीलगुणों के आधार पर अन्तर ज्ञात करना एवं कला एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों में विभिन्न व्यक्तित्व शीलगुणों के आधार पर अन्तर ज्ञात करना था।

7. **बारो एवं बुराबोहेन** (2014) ने **असम के सामान्य शिक्षकों एवं शारीकि शिक्षकों के व्यक्तित्व लक्षणों का तुलनात्मक अध्ययन** किया। असम के पुरूष शारीरिक एवं सामान्य शिक्षकों के व्यक्तित्व शीलगुणों का तुलनात्मक अध्ययन हेतु किये गये

उपरोक्त अध्ययन में न्यादर्श के रूप में असम के विभिनन क्षेत्रों के 50 शारीरिक एवं 50 सामान्य शिक्षकों का चयन किया।। प्रदत्त संकलन हेतु रिवाज्ड आइसेंक पर्सनेलिटी क्वेश्चनेयर का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में शारीरिक एवं सामान्य शिक्षकों के व्यक्तित्व शीलगुणों में अन्तर पाया गया।

8. **चटर्जी** (2015) ने **मेडिकल विद्यार्थियों के व्यक्तित्व प्रकार का अध्ययन** विषय पर शोधकार्य किया। उपरोक्त अध्ययन कोलकाता के मेडिकल विद्यार्थियों के व्यक्तित्व प्रकार के अध्ययन हेतु सम्पनन किया गया था। पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों की समान संख्या रखते हुए कुल 50 विद्यार्थियों को न्यादर्श हेतु चयनित किया गया। प्रदत्त संकलन हेतु मॉड्सले पर्सनेलिटी इन्वेन्टरी का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि अधिकांश विद्यार्थी स्थिर-बर्हिमुखी व्यक्तित्व प्रकार के थे तथा लैंगिक आधार पर बहिर्मुखता एवं मनोविक्षुब्धता के आयामों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

9. **महाजन** (2015) ने **सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र के कर्मचारियों के व्यक्तित्व के पंचकारक सिद्धान्तों एवं व्यवसाय सहभागिता के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन** विषय पर शोधकार्य किया। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य चंडीगढ़ के सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र के कर्मचारियों के व्यक्तित्व के पंच कारक सिद्धान्तों एवं व्यवसाय सहभागिता के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना था। न्यादर्श के रूप में चंडीगढ़ क्षेत्र के 120 सूचना प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित कर्मचारियों को लिया गया।

10. **इन्दौरिया, गिरीजा** (2015) ने **शेखावाटी क्षेत्र की कस्तुरबा गांधी आवासीय विद्यालयों की बालिकाओं के आत्मविश्वास, समायोजन एवम् मानवीय मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन** शीर्षक पर पी-एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि झुंझनूं जिले की कस्तुरबा गाँधी उच्च प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं के आत्मविश्वास, समायोजन एवं मानवीय मूल्यों में कोई सम्बन्ध नहीं है। सीकर जिले की कस्तुरबा गाँधी उच्च प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं के आत्मविश्वास, समायोजन एवं मानवीय मूल्यों में कोई सम्बन्ध नहीं है। चूरू जिले की कस्तुरबा गाँधी उच्च प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं के आत्मविश्वास, समायोजन एवं मानवीय मूल्यों में कोई सम्बन्ध नहीं है।

## 6. Research Gaps identified in the proposed field of investigation. (Based on the review)

किसी भी अध्ययन की सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप एवं उपयोगितात्मक पहलुओं पर निर्भर करती है। साथ ही इस संदर्भ में यह देखा जाता है कि अध्ययन समाज को क्या नई दिशा देने वाला है। उपर्युक्ता मानक रूपी दृष्टिकोण को मध्यनजर रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन सार्थक एवं औचित्यपूर्ण है, क्योंकि प्रस्तुत शोधात्मक अध्ययन के परिणाम निः सन्देह राज्य के शैक्षिक सरोकारों के लिए लाभकारी उपागम साबित होंगे। इसके साथ-साथ प्राप्त परिणामों के आलोक में भावी परियोजना के निर्माण के आधारों का व्यापक क्षेत्र प्राप्त होगा, कमियों एवं रिसावों का दोहराव नहीं होगा।

प्रस्तुत समस्या से सम्बन्धित चरों पर अलग-अलग अनेक अध्ययन सम्पादित हुए, लेकिन **माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में व्यक्तित्व, आत्मसम्प्रत्यय एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन** पर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है। यह कार्य एक नवाचार शैक्षिक लक्ष्य पर विद्यालय उपयोगी, समाज उपयोगी एवं माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए फलदायी होगा। किसी भी अध्ययन की सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप एवं उपयोगितात्मक पहलुओं पर निर्भर करती है। साथ ही इस संदर्भ में यह देखा जाता है कि अध्ययन समाज को क्या नई दिशा देने वाला है। उपर्युक्ता मानक रूपी दृष्टिकोण को मध्यनजर रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन सार्थक एवं औचित्यपूर्ण है।

## 7. मुख्य शोध परिकल्पनाएँ :-

**Major Research Hypothesis :-**

1. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के आत्मसम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

3. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

4. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

5. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मसम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

6. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

7. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

8. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मसम्प्रत्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

9. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

## 8. शोध प्रविधि :-

**Research Methodology :-**

### 8.1 शोध विधि :-

अनुसंधान की श्रेष्टता विधि पर निर्भर करती है। विधि अनुसंधान प्रक्रिया को परिचालित करने का एक तरीका है जो समस्या की प्रकृति द्वारा निर्धारित है। शोधकार्य एक विशेष महत्व का उत्तरदायित्वपूर्ण सत्य कार्य है और अगर इस उत्तरदायित्व को पूर्ण करने में वैज्ञानिक व उपयुक्त विधि का प्रयोग नहीं किया जाये तो यह कार्य कभी पूर्ण नहीं हो सकता है।

प्रस्तुत शोध में विषय की समस्या को भली प्रकार समझकर, सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला गया कि शोध समस्या के मुख्य

उद्देश्य अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि से अधिक सम्बन्धित हैं। अतः शोध की प्रकृति व सर्वेक्षण विधि की उपयोगिता के आधार पर शोधकर्त्ता ने प्रस्तुत अनुसंधान में आँकड़ों के एकत्रीकरण हेतु **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया है।

## 8.2 न्यादर्श :–

शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श में बीकानेर संभाग के श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर एवं चूरू जिले के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् 800 विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा। इन विद्यार्थियों में 400 विद्यार्थी सरकारी विद्यालयों के होगें और 400 विद्यार्थी गैर सरकारी विद्यालयों के होगें। सरकारी विद्यालयों के 400 विद्यार्थियों में से 200 छात्र एवं 200 छात्राओं का वर्गीकरण किया जायेगा। इन छात्रों में 100 ग्रामीण सरकारी विद्यालयों के होगें तथा 100 छात्र शहरी सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी होगें। तथा 200 छात्राओं में 100 छात्राएं ग्रामीण सरकारी विद्यालय की होगी तथा 100 शहरी सरकारी विद्यालयों की होगी।

इसी प्रकार गैर सरकारी विद्यालयों के 400 विद्यार्थियों में से 200 छात्र एवं 200 छात्राओं का वर्गीकरण किया जायेगा। इन छात्रों में 100 ग्रामीण गैर सरकारी विद्यालयों के होगें तथा 100 छात्र शहरी गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी होगें। तथा 200 छात्राओं में 100 छात्राएं ग्रामीण गैर सरकारी विद्यालय की होगी तथा 100 शहरी गैर सरकारी विद्यालयों की होगी। इस प्रकार अनुसंधानकर्त्ता द्वारा न्यादर्श का चयन किया जायेगा।

चयनित न्यादर्श का विद्यालय संगठन, लिंगवार एवं रहवास-वार वितरण रेखीय चित्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है

.

## न्यादर्श का वितरण

**कुल – 800 विद्यार्थी**

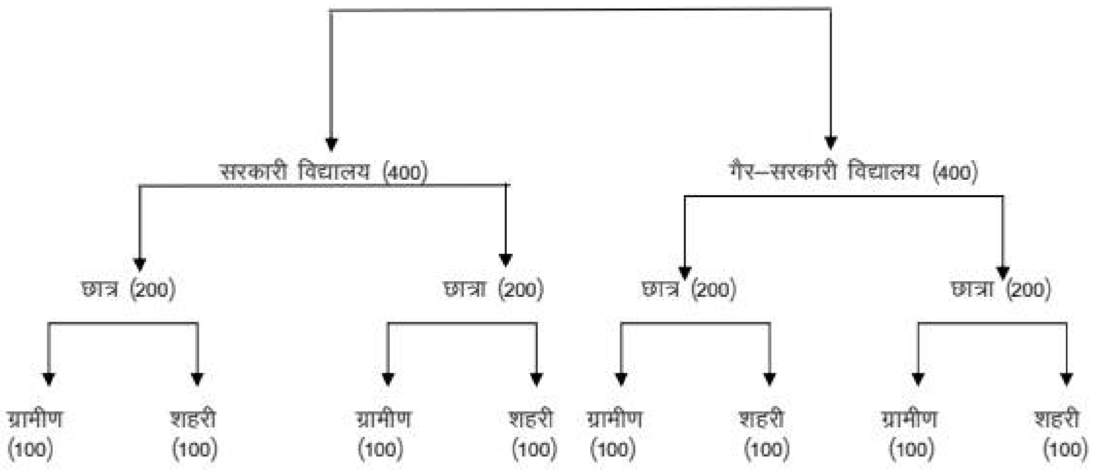

## 8.3 शोध के उपकरण :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित प्रमापीकृत एवं स्वनिर्मित शोध उपकरणों का प्रयोग प्रस्तावित है –

1. **व्यक्तित्व मापनी :–** शोधकर्ता द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व प्रकार का अध्ययन करने के लिए डॉ. महेश भार्गव (2000) द्वारा निर्मित व्यक्तित्व आयाम प्रमापनी (Dimensional Personality Inventory) का प्रयोग किया जायेगा।
2. **आत्मसम्प्रत्यय मापनी :–** शोधकर्ता द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मसम्प्रत्यय का अध्ययन करने के लिए डॉ.राजकुमार सारस्वत (2001 Re) द्वारा निर्मित आत्मसम्प्रत्यय प्रश्नावली (SCQ) का प्रयोग किया जायेगा।
3. **समायोजन मापनी :–** शोधकर्ता द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करने के लिए सिन्हा और सिन्हा (2009 Re) विद्यालय विद्यार्थियों के लिए समायोजन मापनी का प्रयोग किया जायेगा।

## 8.4 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

प्रस्तुत शोधकार्य में एकत्रित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकी का प्रयोग किया जायेगा –

1. मध्यमान
2. प्रमाप विचलन
3. टी–मान
4. सहसम्बन्ध।

## 8.5 अध्ययन का सीमांकन :–

प्रस्तुत शोधकार्य बीकानेर संभाग के श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर एवं चूरू जिले के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों तक सीमित रहेगा।

## 8.6 प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या :-

**व्यक्तित्व :-**

व्यक्तित्व व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक व्यवस्था का गत्यात्मक संगठन है। जो कि उसे उसके पर्यावरण के साथ समायोजित करने के लिए अनोखे ढंग से अपनाया जाता है। यह समायोजन गृह स्वरूप, समाज संवर्ग एवं विद्यालय के साथ किस प्रकार हो जाता है। इसकी जानकारी व्यक्तित्व का समन्वित समायोजित स्वरूप प्रकट करेगा।

इसके अन्तर्गत मनुष्य के सब प्रकार के आन्तरिक एवं बाहरी गुणों का समावेष होता है। व्यक्ति व्यवहार से जो कुछ भी होता है वह सब उसके व्यक्तित्व का ही प्रतीक है। व्यक्तित्व समाज द्वारा मान्य तथा अमान्य गुणों का संतुलन है। व्यक्तित्व एक व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यवहार-प्रतिमान और इनकी विशेषताओं के योग का उल्लेख करता है। वास्तव में व्यक्तित्व उस ढंग को कहते हैं जिसके द्वारा कोई व्यक्ति अपने परिवेश के साथ अनुकूलन करता है। व्यक्तित्व एक व्यक्ति के व्यवहार के तरीकों, रूचियों, दृश्टिकोणों, क्षमताओं तथा तरीकों का सबसे विशिष्ट संगठन है जिसके आधार पर वह किसी समस्या को समझता है तथा उसका समाधान करता है। व्यक्तित्व की महत्ता को देखते हुए विद्यार्थियों के सुदृढ़ व्यक्तित्व का निर्माण करना आज की महत्ति आवश्यकता है।

**आत्मसम्प्रत्यय :-**

आत्म सम्प्रत्यय का अर्थ है स्वयं की खोज, सभी क्षेत्रों मे स्वयं के प्रति अपनाया गया दृष्टिकोण। **"आत्म-सम्प्रत्यय"** के अन्तर्गत **"आत्म छवि"** एंव **"आत्म-मूल्यांकन"** दोनों ही शब्द आते हैं। आत्म-सम्प्रत्यय शब्द के लिए एरिकसन एवं उसके अनुयायियों ने पहचान शब्द का प्रयोग किया है।

**डॉ. एस.एस. माथुर** के अनुसार - ***"एक व्यक्ति जिस प्रकार से अपना प्रत्यक्षीकरण करता अथवा जिस ढ़ंग से अपने को देखता है उसे व्यक्ति का आत्म सम्प्रत्यय कहते हैं।'***

**<u>समायोजन</u> :–**

समायोजन वह प्रकिया है जिसमें व्यक्ति अपने और पर्यावरण के बीच सामंजस्यपूर्ण संबध प्राप्त करने के लिये अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। कुछ मनोवैज्ञानिक समायोजन को ऐसा व्यवहार बताते है जिसका उद्देश्य तनाव कम करना होता है।

**कालमैन के अनुसारः–** "समायोजन व्यक्ति द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति एवं कठिनाईयों का सामना करने के प्रयास का परिणाम है।"

## 9. संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

**List of References Cited :–**

### (A) LIST OF ENGLISH BOOKS :-


**1.** Aggarwal, J.C. (1991) : 'Educational Research an Introduction' Arya book Depot, Karol Bagh, New Delhi.

**2.** A.P. Singh and Amrlatanshu : 'Phychology Basis of Learning and Development' Arya book Depot, Karol Bagh, New Delhi.

**3.** Almy, Millie (1996) : 'Child Development,' Henry Holt and Company, New York

**4.** Asthana, Dr. Bipin (2005) : 'Measurement and Evaluation in Psychology and Education' Vinod Pustak Mandir Agra.


### (B) List of Journal & Surveys:-


1. NCERT (1981) Forth Survey of Research in Education (1983-88), Vol. I,II New Delhi.
2. NCERT (2000) Fifth Survey of Research in Educational Research (1988-1992) Vol. I,II New Delhi.
3. NCERT (2006) Six Survey of Educational Research (1993-2000) Vol. - I, II New Delhi.
4. Dissertation Abstracts International, vol. 57, 58. No.1-12 the Humanities and social science, (1997)

## ( C) हिन्दी सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-


1. अस्थाना, विपिन (1994) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा –2 उ. प्र. पृ.स. 170
2. अग्रवाल, ईश्वर प्रकाश एवं अनिता, (1995) : ''बाल विकास एवं शैक्षिक क्रियाएँ'' आर्य बुक डिपो करोल बाग, नई दिल्ली, पृ. सं. 137.
3. अटल बिहारी वाजपेयी (2000) : 'विचार बिन्दु' किताब घर नई दिल्ली पेज- 144
4. अरोड़ा, रीता एवं मारवाड़, सुरेश (2001) : ''शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी के आधार'' 23 चौड़ा रास्ता, जयपुर पृ.सं.43
5. कपिल एच. के.(2004) : ''अनुसंधान विधियाँ, एच. पी. भार्गव बुक हाऊस, 4 / 230, कचहरी घाट, आगरा


## (D) Websites :-


1. www.ssmrae.com/wisdom/../.pdf
2. www.shodh.ganga.com/hdl/handle.net/10603/4471
3. www.indianjournals.com/ijor.aspx?targetijor: ajdm&volume-4
4. www.eduresearch.dauniv.ac.in/file.asp?


2.1.2017

Signature of the Candidate with date

Outline Approved

Name and Signature of Supervisor with date & Seal.

----------------------

----------------------

----------------------